सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – बाल कविता में नयापन

डॉ. शिल्पा दादाराव जिवरग
असोसिएट प्रोफेसर एवं शोधनिर्देशक
हिन्दी विभाग, पंडित जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय,
छत्रपती संभाजीनगर – 431 001
फोन – 8275322794
shilpajivrag@gmail.com

सारांश :

बाल अवस्था, युवा अवस्था, प्रौढ अवस्था एवं वृद्ध अवस्था इन चार अवस्थाओं से मनुष्य का जीवन गुजरता है । जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण और अन्य तीन अवस्थाओं की नींव रखी जाती है, वह है बाल अवस्था । मनुष्य का बचपन उसके आने वाले भविष्य निर्माण में सहायक होता है । इसी बचपन को बच्चों के जीवन में लाने के लिए हमें साहित्य मदतगार सिद्ध होता है । किसी भी देश के भविष्य उसके बालक होते हैं । इसलिए संसार के प्रत्येक देश में बालकों के विकास पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है । हिंदी साहित्य के बाल साहित्य में ऐसी जादूई लय और प्रभावशाली रचनाएँ अनंत है और वे बाल साहित्य की हर विधा में है । आजादी के बाद की बाल कविता को एक नया कल्पांतर देकर उनमें नई ताजगी और समय की नई धडकने लाने वाले बड़े और दिग्गज कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (1927–1983) एक है । बालगीतों में एक नयापन, आधुनिक रंग–ढंग, गति और अंदाज देने वाला उनका अंदाज औरों से एकदम अलग और बेमिसाल है ।

कोई भी बड़ी और समृद्ध भाषा का मापदंड उसका बालसाहित्य है । जो भाषा सच में बड़ी होती है और जिसमें संवेदनाओं का आयतन बड़ा होता है, वह उतनी ही अपने समाज में बच्चों और उनके लिए लिखे जा रहे साहित्य की परवाह करती है और यही नहीं, दुनिया के बड़े से बड़े साहित्यकारों ने बहुत ममत्व और आनंद से भरकर बच्चों के लिए लिखा है । शायद इसलिए कि बच्चों के लिए लिखते समय मन एक बच्चे जैसा ही सरल हो जाता है और निर्मल आनंद में डूब जाता है ।

किसी लेखक के लिए बाल साहित्य की सर्जना एक दोहरे सुख की तरह है । एक तो बाल साहित्य लिखते समय अपने बचपन को फिर से जी लेने का दुर्लभ सुख मिलता है। वैसे भी बाल साहित्य पढ़ना और बाल साहित्य लिखना दोनों ही एक जादुई सुख की तरह है । इसलिए कि बाल साहित्य के साथ मन और कल्पना की जादुई उड़ान जुड़ी है । फिर आज के बच्चे के मन और इच्छा संसार से गहराई से जुड़ते हुए लगता है, दुनिया उससे कहीं अधिक सुंदर और अर्थवान है, जितनी वह हमें ऊपर से नजर आती है । बच्चों से जुड़ना मानो आने वाले युग और भविष्य से भी संवाद है, जिनमें बहुत बार तो आज के जटिल प्रश्नों के जवाब छिपे होते हैं ।

हिंदी के बाल साहित्य में ऐसी जादुई लय और प्रभावशाली रचनाएँ अनंत है और वे बाल साहित्य की हर विधा में हैं । अपने एक बड़े पुराने और वरिष्ठ बालकवि कन्हैयालाल मत्त के शब्दों को याद करूं तो, "बाल साहित्य वह है जिसे पढ़कर बच्चे के मन की कली खिल जाए।"

आज़ादी के बाद की बाल कविता को एक नया कल्पांतर देकर उनमें नई ताजगी और समय की नई धडकने लाने वाले बड़े और दिग्गज कवियों में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना एक है । बालगीतों में एक नयापन, आधुनिक रंग–ढंग, गति और अंदाज देने वाला उनका अंदाज औरों से एमदम अलग और बेमिसाल है। खेल खेल में गीत रचने और उसमें अपने समय और युगप्रश्नों से जुड़ी कोई नई बात ले आने का उनका कौशल निराला है ।

इसी तरह सर्वेश्वर ने बच्चों के लिए ऐसे नाटक लिखे जो अपनी रंगमंचीय सक्रियता और जबरदस्त रचनात्मकता के लिहाज से हमेशा याद किए जायेंगे । बच्चों की दुनिया में खेल–खेल में बहुत कुछ नया जोड़ने वाले नाटक जो सही मायने में बच्चों के आधुनिक नाटक कहे जा सकते हैं । इस तरह बाल–साहित्य में कविता और नाटक दोनों मोर्चों पर सर्वेश्वर ने नितांत मौलिक अंदाज में जो काम किया, वह अपनी मिसाल खुद है । सहज हास्य और व्यंग्य के साथ अपने समय के प्रश्नों और समस्याओं से टकराने का साहस उनकी कविताओं और नाटकों को कुछ खिलदंडा बनाने के साथ–साथ एक अलग आभा भी देता है, जिसमें हलके ढंग से गहरी बात कहने की क्षमता हो और यही उन्हें एक अलग और विशिष्ट शख्सियत भी देती है ।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना सहज ही हिंदी बाल कविता के एक बड़े प्रतिभावान कवि हैं । वे जिस ढंग से एक छोटी–सी बात को लेकर आगे चलते हैं और कविता तराशते हैं, वह काट खुद में एक बड़ी चमक लिए होती है । उनकी बाल कविता को आप दूर से देखकर भी कहेंगे, "यह सिर्फ सर्वेश्वर ही लिख सकते हैं ।" और यह बात दूसरों से सर्वेश्वर को बहुत ऊपर उठा देती है । उनकी भाषा भी यहाँ ऐसी है जैसे जीवन से सीधे–सीधे बतियाकर हाल–चाल पूछ रही हो ।

'बतूता का जूता' के इब्न बतूता का यह बेढब हाल
इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफ़ान में,
थोड़ी हवा नाक में घुस गई,
घुस गई थोडी कान में ।
कभी नाक को कभी कान को
मलते इब्न बतूता,
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता ।
उडते उडते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में,
इब्न बतूता खडे रह गए
मोची की दुकान में ।

इब्न बतूता की तरह ही सर्वेश्वर की 'बिल्ली के बच्चे' नायाब कविता है। कविता में क्या कुछ कहा जा सकता है और उसका केनवस ही नहीं, उसके स्वप्नों और आदर्शों की दुनिया कितनी बड़ी और फैली–फैली हो सकती है । "किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए है" और उन्हें देख–देखकर सर्वेश्वर का कवि न सिर्फ हैरान, बल्कि उत्साहित भी हो रहा है कि "ये बच्चे बड़े होकर अफसर बनेंगे ।" उनका यही उमगता हुआ उत्साह मानो एक अनोखी लय में ढल गया है, जिसमें खेल भी है और नए जमाने की समझ भी।

किताबों में बिल्ली ने बच्चे दिए है

ये बच्चे बड़े होके अफसर बनेंगे,
दरोगा बनेंगे किसी गाँव के ये
किसी शहर के ये कलक्टर बनेंगे ।
न चूहों की इनको जरुरत रहेगी
बडे होटलों के मैनेजर बनेंगे
ये नेता बनेंगे और भाषण करेंगे
किसी दिन विधायक, मिनिस्टर बनेंगे
पिलाऊंगा मैं दूध इनको अभी से
मेरे भाग्य के ये रजिस्टर बनेंगे ।

ऐसी कविताएँ हिंदी में उंगलियों पर गिनने लायक है। यों कविता का मिज़ाज थोड़ा हास्यपरक है और इसमें खासा चुटीलापन भी है, पर साथ ही इसमें एक बडा गंभीर संदेश भी छिपा है। इस कविता को पढ़कर पता चलता है कि पढ़ने लिखने को सर्वेश्वर कितने बड़े मूल्य के रूप में सामने रखतें हैं । यानी लिखना–पढ़ना जरूरी है, यहाँ तक कि बिल्ली के बच्चे भी किताबों में पैदा होते है तो वे कुछ भी बन सकते हैं और बड़ा नाम कमाकर दिखा सकते हैं ।

इसी तरह 'ध्रुवतारा' सर्वेश्वर के लिए ऊंचे जीवन–आदर्शों की मिसाल है । ध्रुवतारे पर सर्वेश्वर ने एक सुंदर कविता लिखी है, जिसमें जीवन में ऊँचा उठने और कुछ कर दिखाने के सपने के साथ–साथ ऊँचे आदर्शों की भी झलक है–

'ऊँचा और खींच दे कोई
सपनों का कंदील हमारा
धरती से अच्छा लगता है
अंबर में अपना उजियारा ।'

फिर ध्रुवतारे की एक खासियत यह भी है कि वह भूले–भटकों को रास्ता दिखाता है । वह निरंतर जलने वाले एक ऐसे दीप की तरह है जो हर किसी को भटकने से रोकता है तथा राह भूले को घर का पता बताता है –

दूर आ रहा होगा कोई
मेरे घर का पता पूछता,
उसे भटकने से रोकेगा
यह मेरा रंगीन सितारा ।

सर्वेश्वर की कई कविताओं में हास्य की बडी मीठी झलक है। उनकी 'मंहगू की टाई' में हास्य–विनोद के किस्से है जिनमें बदले हुए जमाने का यथार्थ भी है । मंहगू को नौकरी की दरकार थी । इसलिए उसने रोब डालने के लिए टाई खरीदी । लेकिन फिर भी नौकरी नहीं मिली तो बेचारे बड़ी परेशानी में पड़ गये । इस बाल कविता में हमारे समाज की आधुनिकता की विडंबना पर बड़ा महीन व्यंग भी है ।

मंहगू ने महँगाई में
पैसे फूंके टाई में
फिर भी मिली न नौकरीं
औंधे पड़ चटाई में ।

गिटपिट करके हार गए
टाई ले बाजार गए,
दस रुपए की टाई उनकी
बिकी नहीं दो पाई में ।

इसी तरह सर्वेश्वर की एक कविता में चूहें और ऊँट का मजेदार किस्सा है । चूहा बड़ी अकड़ के साथ ऊँट पर सवार होकर अपने ननिहाल जा पहुंचा तो वहा अजब तमाशा हुआ । देखते ही देखते ऊँच गायब हो गया । इन पंक्तियों में जरा ऊँट पर सवार होकर सैर करने निकले चूहे के ठाट–बाट देख लीजिए।

चूहा एक ऊँट पर चढ़,
झटपट चला बहादुरगढ़ ।
राह में गहरा ताल मिला,
चूहे का ननिहाल पडा ।
चूहा खा–पी सो गया,
ऊँट नहाकर खो गया ।

एक कविता में नेता की दो टोपियों और गदहे के दो कानों का झमेला है और इसी में हास्य–विनोद के बड़े ही मजेदार रंग भी हैं –

नेता के दो टोपी
और गदहे के दो कान,
टोपी अदल–बदलकर पहनें
गदहा था हैरान ।

सर्वेश्वर की कुछ कविताओं में जीवन के ऐसे दृश्य हैं जिनमें बहुत सहज हास्य–बोध है । इसलिए वे मन में गड़े रह जाते हैं। सर्वेश्वर बडे निराले अंदाज में उन्हें बाल कविता में लाते हैं । उनकी कविता में जरा सिर पर मटका रखे इस ग्वालिन को देखे, जिसे शाम होने की वजह से अपने गाँव बरसाने जाने की जल्दी है –

सिर पर रक्खे
दही का मटका,
झटपट उसने
केला गटका ।
फिर बोली
यूं आँखे मटका,
और न ज्यादा
मुझको भटका ।
शाम हो गई, घर जाना है
गाँव हमारा बरसाना है ।

जिंदगी में हर जगह नकल करने वाले मिल जाते हैं और वे नकल में ऐसी महारत हासिल कर लेते हैं कि अपने करतबों से असली को भी पछाड देते हैं । पर असली कितनी ही मात खा जाए, उसके पास एक ऐसा तीर जरूर होता है जिसके छुटते ही नकली के होश फाख्ता हो जाते हैं । सर्वेश्वर की एक कविता में भी यही होता है जिसमें ऊँट और हाथी की तुलना है। हर जगह हाथी खुद को बडा और ज्यादा रोबदार साबित कर लेता है–

देख ऊँट को पैदल चलते
हाथी ट्रक पर हुआ सवार,
देख ऊँट को बीड पीते
हाथी पीने लगा सिगार ।
देख ऊँट का चना–चबेना
हाथी ने ली केक उकार
देख ऊँट की फटी लंगोटी
हाथी लाया सूट उधार ।

निष्कर्षतः सर्वेश्वर की किशोर पाठकों के लिए लिखी गई 'यदि मैं घोड़ा होता' सरीखी लंबी कविताएँ भी कमाल की हैं । इन्हें पढ़कर बच्चों को लेकर उनकी खुली सोच पता चलती है । सर्वेश्वर ने बच्चों के लिए बहुत अधिक कविताएँ नहीं लिखी, पर जितनी भी लिखी है, वे बडी प्रयोगात्मक है और कुछ न कुछ नई बात, नया अंदाज उनमें है । उनकी बाल कविताओं के संग्रह हैं– 'बतूता का जूता', 'मंहगू की टाई', 'बिल्ली के बच्चे' तथा 'नन्हा ध्रुवतारा' जिन्हें आज भी बच्चे बड़े चाव से पढ़ते हैं । सच तो यह है कि सर्वेश्वर की कविताओं में कोई न कोई नई बात, और भाषा का उस्तादी भरा नया अंदाज तथा भाव मुद्राएँ जरूर मिल जाती हैं । इसलिए सर्वेश्वर की गिनती उन थोडे से दिग्गज साहित्यकारों में होती है, जिन्होंने बाल साहित्य में नई जमीन तोडी और सचमुच नया इतिहास रच दिया । इसलिए बाल पाठक ही नहीं, नई पीढ़ी के लेखक भी उनकी रचनाएँ इतनी उत्सुकता और कौतुक के साथ पढ़ते हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1) सम्पादक डॉ. शकन्तुला– बाल साहित्य का स्वरूप और रचना संसार
2) डॉ. जगदीश गुप्त– नई कविता स्वरूप और समस्याएँ
3) डॉ. अरुण कुमार– नई कविता – कथ्य एवं विमर्श, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण –1988
4) डॉ. हरिचरण शर्मा–सर्वेश्वर का काव्य संवेदना और सम्प्रेषण.
5) डॉ. कालीचरण स्नेही– सर्वेश्वर और उनका साहित्य, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण–1997